जुलाई: 2024

वर्ष : 7 अंक : 10

सिफरी मासिक समाचार

नील क्रांति की ओर अग्रसर

निदेशक की कलम से

जो सही है उसे करने के लिए हर समय श्रेष्ठ समय है।" मार्टिन लूथर किंग जूनियर

संस्थान का मासिक न्यूज़लेटर का जुलाई 2024 आपके समक्ष प्रस्तुत है। इस अंक में जून, 2021 में संस्थान की गतिविधियों को दिखाया गया है।

मात्स्यिकी क्षेत्र में एक विश्व प्रसिद्ध नाम है- डा. हीरालाल चौधुरी का, जिनके कठिन प्रयास के कारण मछलियों का प्रेरित प्रजनन संभव हो पाया जो देश के नीली क्रांति का एक अभिन्न आधार बना। डा. हीरालाल चौधुरी के इस अनोखे प्रयास के सम्मान में भारत सरकार ने वर्ष 1957 में 10 जूलाई को 'राष्ट्रीय मत्स्य पालक दिवस' के तौर पर घोषित किया।

संस्थान में हर वर्ष 10 जुलाई को 'राष्ट्रीय मत्स्य पालक दिवस' के रूप में मनाया जाता है। इस अवसर पर कई प्रकार के कार्यक्रम जैसे संगोष्ठी, किसानों के साथ पारस्परिक संवाद तथा प्रगतिशील किसानों को सम्मानित करना। साथ ही, 16 जुलाई को भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद का स्थापना दिवस भी मनाया जाता है। इस दिन विभिन्न श्रेणियों के अंतर्गत परिषद के अधीनस्थ संस्थानों को पुरस्कार दिया जाता है।

धन्यवाद,

(बसन्त कुमार दास)

हुगली की महिला मछुआरों द्वारा एनएमसीजी के तहत कई कार्यक्रमो का आयोजन

आईसीएआर-सिफरी, बैरकपुर ने अपनी प्रमुख नमामि गंगे परियोजना के तहत बालागढ़, हुगली, पश्चिम बंगाल में गंगा नदी के संरक्षण और पुनरुद्धार की दिशा में राष्ट्रीय जीवपालन कार्यक्रम III जारी रखा। नदी जीवपालन का मुख्य उद्देश्य गंगा नदी के समाप्त हो रहे मछली भंडार को फिर से भरना है। आज तक, आईसीएआर-सिफरी ने देश के चार राज्यों में कई साइटों पर भारतीय मेजर कार्प की एक करोड़ से अधिक मछलियों की रैंचिंग किया है। पश्चिम बंगाल के बालागढ़ और सोमरा बाजार क्षेत्र में आईसीएआर-सिफरी ने 2017 से नौ अलग-अलग जीवपालन कार्यक्रमों में 12 लाख से अधिक मछलियों की रैंचिंग किया है। हाल के अध्ययनों से पता चला है कि इस क्षेत्र में रोहू, कतला, मृगल और कैलबासु की कुल पकड़ में 8% की वृद्धि हुई है। इसी क्रम में 30 से 31 मई, 2024 तक लगातार दो दिनों तक पश्चिम बंगाल के हुगली जिले में गंगा नदी के बालागढ़ और सोमरा बाजार खंड में निदेशक और पीआई एनएमसीजी परियोजना डॉ. बसंत कुमार दास की उपस्थिति में एक जीवपालन सह जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किया गया। क्षेत्र के स्थानीय मछुआरों और महिलाओं द्वारा रोहू, कतला और मृगल (आईएमसी) के कृत्रिम रूप से प्रजनन किए गए मछली जर्मप्लाज्म के कुल 6.08 लाख जर्मप्लाज्म नदी में छोड़े गए। आईएमसी के अलावा देशी जैतून बार्ब मछलियां (पुंटियस सरना) भी छोड़ी गईं। स्थानीय मछुआरा समुदाय ने सिफरी के जीवपालन प्रयासों का भरपूर समर्थन किया जिससे देशी मछलियों के संरक्षण के अलावा मछुआरों की आजीविका को बढ़ावा मिला। जीवपालन के अलावा, क्षेत्र में संरक्षण को बढ़ावा देने के लिए निदेशक और स्थानीय मछुआरों के बीच एक बैठक भी हुई। इस कार्यक्रम में समाज के सभी वर्गों की सक्रिय भागीदारी देखी गई। इसके अलावा, महिलायों सहित 120 से अधिक मछुआरों ने भी इस कार्यक्रम में भाग लिया और उन्हें गंगा पुनरुद्धार और बहुमूल्य गंगा मछलियों की बहाली के बारे में जागरूक किया गया। कार्यक्रम III जारी रखा। नदी जीवपालन का मुख्य उद्देश्य गंगा नदी के समाप्त हो रहे मछली भंडार को फिर से भरना है। इस कार्यक्रम में समाज के सभी वर्गों की सक्रिय भागीदारी देखी गई। इसके अलावा, महिला मछुआरों सहित 120 से अधिक मछुआरों ने भी इस कार्यक्रम में भाग लिया और उन्हें गंगा पुनरुद्धार और बहुमूल्य गंगा मछलियों की बहाली के बारे में जागरूक किया गया।

"जलीय संसाधन प्रबंधन के लिए आणविक उपकरण" पर व्यावहारिक प्रशिक्षण का आयोजन

आईसीएआर-सिफरी, बैरकपुर, कोलकाता द्वारा 27 मई से 1 जून, 2024 तक "जलीय संसाधन प्रबंधन के लिए आणविक उपकरण" पर व्यावहारिक प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन निदेशक और इस प्रशिक्षण कार्यक्रम के संयोजक डॉ बि. के. दास के मार्गदर्शन में किया गया। प्रशिक्षण में 32 प्रशिक्षु प्रतिभागियों ने भाग लिया जिनमें सहायक प्रोफेसर, छात्र (यूजी, पीजी और पीएचडी) और

प्रेसीडेंसी विश्वविद्यालय, कोलकाता; फकीर मोहन विश्वविद्यालय, बालासोर, ओडिशा; भारतीय विज्ञान शिक्षा और अनुसंधान संस्थान, कोलकाता; चंदर नगर कॉलेज, डब्ल्यूबी; आईसीएआर-केंद्रीय मत्स्य शिक्षा संस्थान, मुंबई; कलकत्ता विश्वविद्यालय, कोलकाता; भारतीय प्राणी सर्वेक्षण, एनआरसी, देहरादून कॉलेज ऑफ फिशरीज, किशनगंज, बिहार; कॉलेज ऑफ फिशरीज, मुजफ्फरपुर, बिहार; केरल यूनिवर्सिटी ऑफ फिशरीज एंड ओशन स्टडीज, केरल और गुरुदास कॉलेज, कोलकाता। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम को आणविक जीव विज्ञान में व्यापक प्रयोगशाला अनुसंधान अनुभव प्रदान करने के लिए संशोधित किया गया था। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम के सीखने के लक्ष्य डीएनए, आरएनए और प्रोटीन के अलगाव, परिमाणीकरण, दृश्य और इमेजिंग सहित विभिन्न प्रयोगशाला तकनीकों पर व्यावहारिक अनुभव थे। प्रशिक्षुओं को न्यूक्लिक एसिड और प्रोटीन के जैव सूचनात्मक विश्लेषण के लिए आवश्यक विभिन्न सॉफ्टवेयर और विश्लेषणात्मक उपकरण भी प्रदान किए गए। जीनोमिक्स, ट्रांसक्रिप्टोमिक्स और प्रोटिओमिक्स के क्षेत्र में हाल की प्रगति को सभी प्रतिभागियों को विभिन्न व्याख्यानों और इंटरैक्टिव सत्रों के माध्यम से सिखाया गया। डॉ. बि. के. दास ने प्रशिक्षुओं को अन्तर्स्थलीय मत्स्य पालन के विभिन्न पहलुओं में उपयोग किए जाने वाले विभिन्न आणविक उपकरणों और तकनीकों से अवगत कराया। उन्होंने उन्नत उपकरणों और तकनीकों के अनुप्रयोग के बारे में भी बताया। उन्होंने मछली निदान और वायरल रोग निदान और प्रबंधन में जैव सूचना विज्ञान में आणविक उपकरणों के अनुप्रयोग के महत्व को भी जोड़ा। एईबी प्रभाग की विभागाध्यक्ष तथा इस प्रशिक्षण कार्यक्रम की सह-संयोजक डॉ. अर्चना सिन्हा ने आज के शोध में इस प्रशिक्षण के महत्व पर प्रकाश डाला। आईसीएआर -सीआईएफई, मुंबई के वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. अन्नम पवन कुमार ने प्रतिभागियों को मछली वर्गीकरण में आणविक उपकरणों के अनुप्रयोग पर ऑनलाइन व्याख्यान दिया। पश्चिम बंगाल पशु एवं मत्स्य विज्ञान विश्वविद्यालय, नादिया, पश्चिम बंगाल के पशु जैव प्रौद्योगिकी विभाग के सहायक प्रोफेसर डॉ. अयान मुखर्जी ने पशु तपेदिक का शीघ्र पता लगाने के लिए आणविक निदान पर व्याख्यान दिया। संस्थान के वैज्ञानिक तथा इस प्रशिक्षण कार्यक्रम के समन्वयक प्रवीण मौर्य, कविता कुमारी तथा एम. शाया देवी ने इस प्रशिक्षण कार्यक्रम का संचालन किया।

विश्व पर्यावरण दिवस

विश्व पर्यावरण दिवस पर, दुनिया भर से लोग स्थिरता और पर्यावरण संरक्षण का जश्न मनाने के लिए एकत्रित होते हैं, साथ ही इस बात पर जोर देते हैं कि पर्यावरणीय मुद्दों को संबोधित करना कितना महत्वपूर्ण है। इस वर्ष विश्व पर्यावरण दिवस 2024 को "भूमि पुनरुद्धार, मरुस्थलीकरण और सूखे से निपटने की क्षमता" थीम के साथ मनाया गया। आईसीएआर-सिफरी, बैरकपुर ने डॉ. बि. के. दास, निदेशक, के नेतृत्व में राष्ट्रीय कृषि विज्ञान अकादमी, कोलकाता चैप्टर के सहयोग से कई कार्यक्रमों के साथ इस दिवस को मनाया। विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर सिफरी ने सोराफुली घाट पर रैंचिंग कार्यक्रम चलाया, जिसके बाद प्लास्टिक प्रदूषण पर जागरूकता शिविर लगाया गया। "नमामि गंगे" कार्यक्रम के तहत, नदी मत्स्य पालन कार्यक्रम शुरू किया, जिसे वैज्ञानिकों और एनएमसीजी परियोजना टीम के अन्य सदस्यों और स्थानीय मछुआरों द्वारा क्रियान्वित किया गया। नदी के स्टॉक को बहाल करने के लिए मोनिरमपुर घाट पर गंगा नदी में 3 लाख आईएमसी और 0.22 लाख देशी मछली सिस्टोमस सरना (ऑलिव बार्ब) सहित लगभग 3.22 लाख फिंगरलिंग छोड़े गए। प्लास्टिक प्रदूषण से संबंधित पर्यावरण और स्वास्थ्य संबंधी मुद्दे अब सार्वभौमिक हैं। 'टीम-सिफरी ने स्थानीय समुदायों को शामिल करके 'प्लास्टिक कचरे' पर एक जन जागरूकता अभियान चलाया। दूसरे भाग में, "तटीय क्षेत्र में जलवायु परिवर्तन पहल" के बारे में स्टाफ सदस्यों और छात्रों को जागरूक करने के लिए मीटिंग रूम में एक व्याख्यान सत्र का आयोजन किया गया। डॉ. उत्तम कुमार मंडल, प्रधान वैज्ञानिक, आईसीएआर-केंद्रीय मृदा लवणता अनुसंधान संस्थान, क्षेत्रीय अनुसंधान स्टेशन, कैनिंग टाउन ने "आत्मनिर्भर तटीय कृषि की ओर कार्यक्रम का समापन डॉ. एस.के. नाग के धन्यवाद ज्ञापन के साथ हुआ।

सिफरी ने सिट्टोंग में अमूर कार्प की शुरुआत

सिट्टोंग, पश्चिम बंगाल, पहाड़ी क्षेत्र के छोटे और सीमांत मछली किसानों के पास अपने छोटे सीमेंटेड टैंक हैं। मछली पालन पर उचित ज्ञान और तकनीकी सहायता की कमी के कारण, वे वाणिज्यिक मछली उत्पादन नहीं कर सकते हैं। इन छोटी इकाइयों से मछली उत्पादन बढ़ाने के लिए तकनीकी सहायता प्रदान करके उनकी आजीविका में सुधार करने के लिए, आईसीएआर-सिफरी द्वारा 9 जून, 2024 को एससीएसपी कार्यक्रम के तहत सिट्टोंग में इनपुट वितरण के साथ जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किया गया। ग्रामीण पहाड़ी समुदाय की सामाजिक-आर्थिक स्थिति को बेहतर बनाने की दृष्टि से, डॉ. बि. के. दास, निदेशक, आईसीएआर -सिफरी के नेतृत्व में उनकी आजीविका को मजबूत करने के लिए अमूर कार्प मछली पालन को बढ़ावा दे रहा है। इस कार्यक्रम में संस्थान ने सिट्टोंग मल्टी एग्रो कोऑपरेटिव (आरईएच) के सहयोग से दार्जिलिंग जिले के सिट्टोंग और मोंगपु की 10 महिलाओं सहित 50 लाभार्थियों को 50,000 अमूर कार्प के बीज वितरित किए। सिट्टोंग ग्राम पंचायत के प्रधान श्री सुशील सुखना और पूर्व प्रधान श्री डिगर लेप्चा ने भी इस अवसर पर अपनी उपस्थिति दर्ज कराई और क्षेत्र में वैकल्पिक आजीविका के अवसर के रूप में मत्स्य पालन के बारे में अपने विचार साझा किए। डॉ. दास ने किसानों से बातचीत की और उन्हें वैज्ञानिकों के साथ वैज्ञानिक मछली पालन के बारे में प्रोत्साहित किया। उन्होंने कुछ प्रशिक्षुओं के प्रश्नों के उत्तर में वैज्ञानिक सलाह भी दी। डॉ. दास ने लोगों को क्लस्टर आधार पर मिशन मोड दृष्टिकोण पर इस मछली पालन को जारी रखने की सलाह दी और उनके लिए सिफरी के समर्थन का आश्वासन दिया।

"असम में बाढ़कृत आर्द्रभूमि (बील्स) के सतत विकास और प्रबंधन" पर कार्यशाला की अध्यक्षता

गुवाहाटी, असम, 19 जून, 2024 आईसीएआर-सिफरी, बैरकपुर के निदेशक डॉ. बि. के. दास ने "असम में बाढ़कृत आर्द्रभूमि (बील्स) के सतत विकास और प्रबंधन" पर एक दिवसीय अंतरराष्ट्रीय कार्यशाला की अध्यक्षता की। कार्यशाला का आयोजन मत्स्य पालन विभाग, असम सरकार ने एशियाई विकास बैंक, एआरआईएएस सोसाइटी, खानापारा, असम सरकार और जीआईजेड के सहयोग से 19 जून, 2024 को गुवाहाटी में किया था। कार्यशाला में मत्स्य पालन विभाग, असम सरकार के अधिकारियों ने भाग लिया जिनमें श्री जी.एस. दास, एसीएस, मत्स्य पालन निदेशक, असम सरकार; एशियाई विकास बैंक के अधिकारी; डॉ. पी. सी. भुयान, डीन कार्यशाला में वेटलैंड इंटरनेशनल, नई दिल्ली के शोधकर्ता, असम राज्य वेटलैंड प्राधिकरण के प्रतिनिधि, असम राज्य जैव विविधता बोर्ड के सदस्य, एनजीओ सदस्य शामिल हुए। अपने उद्घाटन भाषण में डॉ. बि. के. दास ने बाढ़कृत आर्द्रभूमियों के समग्र विकास की आवश्यकता पर बल दिया। उन्होंने आर्द्रभूमियों के एकीकृत प्रबंधन, जलवायु परिवर्तन के उभरते मुद्दों से निपटने के लिए प्रकृति आधारित समाधान और वस्तुओं और सेवाओं के मूल्यांकन पर जोर दिया। डॉ. ए. यू. मुजाद्दादी, प्रधान वैज्ञानिक और ओपन वाटर एक्वाकल्चर उत्पादन और प्रबंधन प्रभाग के प्रमुख, डॉ. एस.के. माझी, प्रधान वैज्ञानिक और गुवाहाटी क्षेत्रीय केंद्र के प्रमुख, डॉ. बी. के. भट्टाचार्य, प्रधान वैज्ञानिक, श्री गणेश चंद्र, वैज्ञानिक और डॉ. सिमांकू बोरा, वैज्ञानिक शामिल हुए। कार्यशाला "देशी मछलियों के उत्पादन और संरक्षण को बढ़ाने के लिए बील मत्स्य पालन के सतत प्रबंधन" के दौरान डॉ बि. के. दास ने "आर्द्रभूमि में मैक्रोफाइट्स का प्रबंधन" पर अपना व्याख्यान दिया और संरक्षण और प्रबंधन के लिए आर्द्रभूमि पारिस्थितिकी तंत्र से जलकुंभी के पूर्ण उन्मूलन की वकालत की। डॉ. सिमांकू बोरा ने "बील में संस्कृति-आधारित मत्स्य पालन और जलवायु लचीला प्रबंधन विकल्प" विषय पर अपना व्याख्यान दिया। डॉ. बी. के. भट्टाचार्य ने "बाढ़कृत आर्द्रभूमि प्रबंधन के लिए सिफरी द्वारा विकसित प्रबंधन मॉड्यूल" पर बात की, जबकि श्री गणेश चंद्र ने "असम के बाढ़कृत आर्द्रभूमि मत्स्य पालन में संस्थागत तंत्र और शासन पैटर्न" पर व्याख्यान दिया। सिफरी के निदेशक ने डीओएफ, असम से स्थानीय समुदायों की समस्याओं की पहचान करने, उन्हें मजबूत करने और असम में बील मत्स्य पालन विकास के लिए सह-प्रबंधन दृष्टिकोण का पालन करने को कहा।

डॉ. बी. मीनाकुमारी, अध्यक्ष, आरएसी, द्वारा गुवाहाटी क्षेत्रीय केंद्र का दौरा

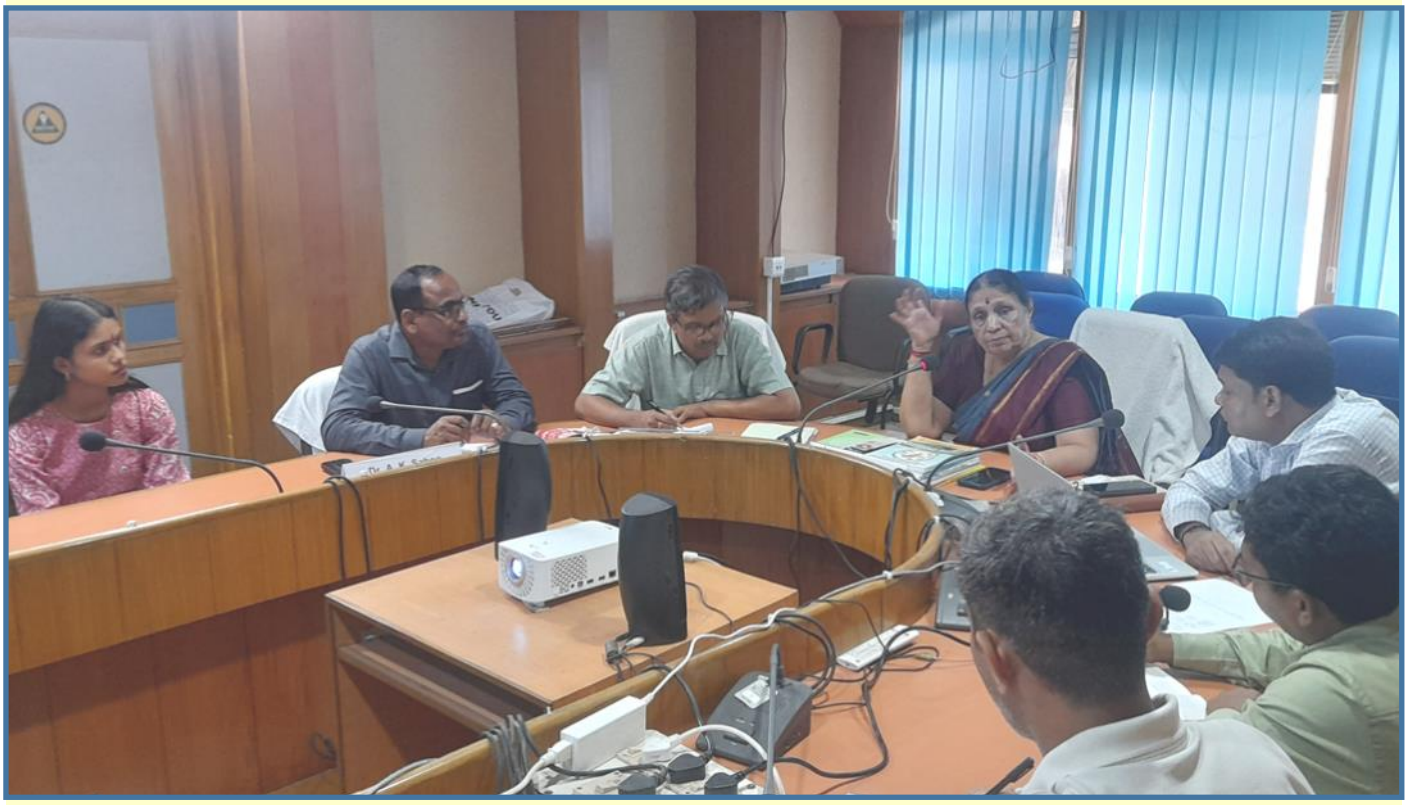

डॉ. बी. मीनाकुमारी, पूर्व निदेशक, आईसीएआर-सीआईएफटी, कोच्चि; पूर्व डीडीजी (मत्स्य पालन), आईसीएआर, नई दिल्ली; पूर्व अध्यक्ष, राष्ट्रीय जैव विविधता प्राधिकरण, चेन्नई और अध्यक्ष, आरएसी, आईसीएआर-सिफरी, बैरकपुर ने 20-23 जून, 2024 के दौरान आईसीएआर-सिफरी के गुवाहाटी क्षेत्रीय केंद्र का दौरा किया। इस यात्रा के दौरान उनके साथ संस्थान के वरिष्ठ वैज्ञानिक और आरएसी के सदस्य सचिव डॉ. ए. के. साहू भी थे। आरएसी के अध्यक्ष ने 21 जून, 2024 को केंद्र के अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस कार्यक्रम में भी भाग लिया। इसके बाद उन्होंने केंद्र के सभी वैज्ञानिक, तकनीकी, प्रशासनिक और सहायक कर्मचारियों के साथ बैठक की अध्यक्षता की। बैठक में, आरएसी के अध्यक्ष ने देश के मत्स्य पालन क्षेत्र के विकास के लिए और विशेष रूप से अन्तर्स्थलीय मत्स्य पालन के लिए नवीनतम तकनीकों के उपयोग की आवश्यकता पर बल दिया। उन्होंने केंद्र के वैज्ञानिक कर्मचारियों के कौशल में सुधार के लिए आईआईटी, आईएनसीओआईएस जैसे संस्थानों के साथ सहयोग के महत्व पर जोर दिया

ताकि हाल की तकनीकी प्रगति के साथ तालमेल रखा जा सके। उन्होंने केंद्र के वैज्ञानिक कर्मचारियों से अपनी उच्च अपेक्षाएं व्यक्त कीं और केंद्र की गतिविधियों की सराहना की जो देश के पूरे पूर्वोत्तर क्षेत्र की जरूरतों को पूरा कर रही है। डॉ. सुभाशीष दत्ता, प्रोफेसर, सिविल इंजीनियरिंग विभाग, आईआईटी, गुवाहाटी और सदस्य, आरएसी, आईसीएआर-सिफरी भी बैठक में मौजूद थे। इस संबोधन में, उन्होंने आईआईटी, गुवाहाटी की गतिविधियों पर प्रकाश डाला और मत्स्य पालन में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस और डीप लर्निंग के अनुप्रयोग के क्षेत्र में आईसीएआर-सिफरी के साथ सहयोग करने की इच्छा व्यक्त की। उनके भाषण के बाद डॉ. एस.के. माझी, प्रधान वैज्ञानिक और क्षेत्रीय केंद्र के प्रमुख द्वारा केंद्र की चल रही गतिविधियों पर एक प्रस्तुति दी गई। बैठक का समापन केंद्र के वैज्ञानिक डॉ. सिमंकू बोरा द्वारा धन्यवाद ज्ञापन के साथ हुआ। 22 जून, 2024 को, अध्यक्ष आरएसी ने मेघालय के शिलांग के उमियाम जलाशय में आईसीएआर-सिफरी के पिंजरा स्थल का भी दौरा किया।

सिफ़री द्वारा राजभाषा हिन्दी कार्यान्वयन की दिशा में एक प्रयास- ऑनलाइन अनुवाद टूल्स पर कार्यशाला का आयोजन

भाकृअनुप-केन्द्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, बैरकपुर ने राजभाषा हिन्दी कार्यान्वयन की दिशा में एक नवीन प्रयास किया है। संस्थान मुख्यालय में दिनांक 25 जून 2024 को "ऑनलाइन अनुवाद टूल्स का प्रयोग" विषय पर एक-दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस कार्यशाला का उद्घाटन डा. श्रीकान्त सामन्ता, प्रभागाध्यक्ष एवं सर्वकार्याधिकारी, हिन्दी कक्ष के स्वागत सम्बोधन के साथ किया गया जिसमें उन्होंने राजभाषा कार्यान्वयन में हिन्दी अनुवाद की भूमिका को बताया। इस अवसर पर संस्थान के निदेशक, डा. बि. के. दास ने माननीय प्रधानमंत्री के वर्ष 2047 तक के विकसित भारत के लक्ष्यों पर प्रकाश डालते हुए हिन्दी भाषा के बढ़ते प्रयोग के बारे में विस्तार से चर्चा की। उन्होंने आधुनिक तकनीक जैसे इंटरनेट ऑफ थिंग्स (IoT) कृत्रिम बुद्धिमत्ता (Artificial Intelligence) में अनुवाद की महत्ता के बारे में बताया। इस कार्यशाला में दो सत्र रखे गए थे – प्रथम सत्र में श्री संजीव कुमार साहु, वैज्ञानिक तथा

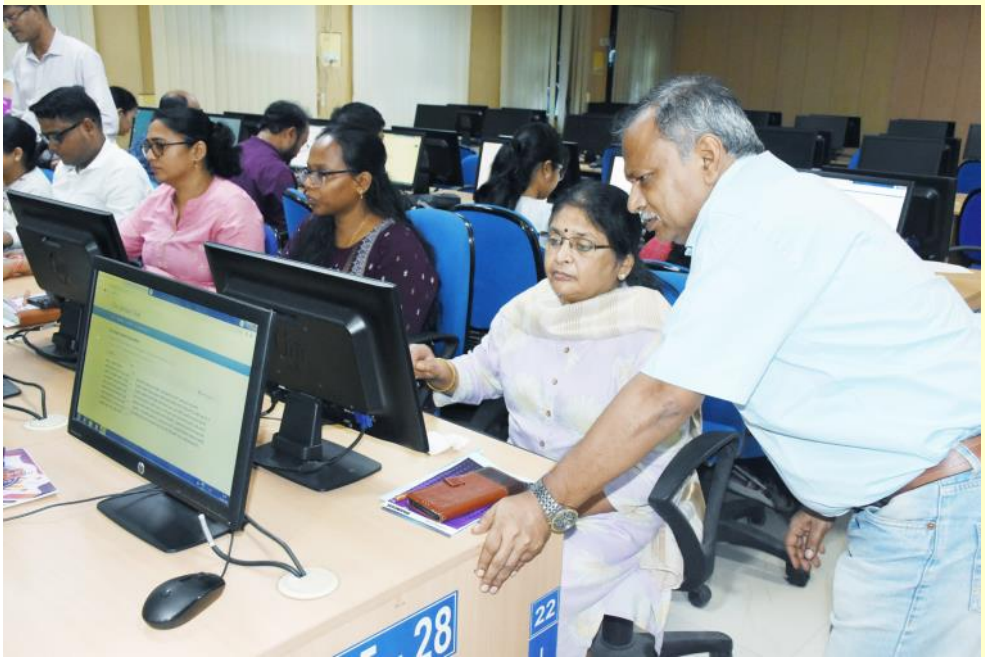

श्री प्रवीण मौर्य, वैज्ञानिक ने कार्यशाला के परिचय के साथ हिन्दी अनुवाद की उपयोगिता पर चर्चा किया। दूसरे सत्र में श्री संजीव कुमार साहु, वैज्ञानिक तथा सुश्री सुनीता प्रसाद, स.मु.तक.अधि. (हिन्दी) द्वारा "ऑनलाइन टूल्स के प्रकार एवं प्रयोग पर एक पावरपॉइंट प्रस्तुत किया गया। अंतिम सत्र, ऑनलाइन अनुवाद टूल्स के अभ्यास पर केंद्रित था जिसमें प्रतिभागियों को अनुवाद और हिन्दी टायपिंग पर प्रशिक्षण दिया गया। इस अभ्यास सत्र में उपरोक्त प्रशिक्षकों के साथ श्रीमती सुमेधा दास, तकनीकी सहायक (हिन्दी) ने भी योगदान दिया। कार्यशाला में वैज्ञानिक, तकनीकी और प्रशासनिक वर्ग से कुल 20 संस्थान कर्मियों ने भाग लिया।

इस कार्यशाला का सफल कार्यान्वयन संस्थान के निदेशक, डा. बि. के. दास के मार्गदर्शन में डा. श्रीकान्त सामन्ता, प्रभागाध्यक्ष एवं सर्वकार्याधिकारी, हिन्दी कक्ष; श्री संजीव कुमार साहु, वैज्ञानिक; श्री प्रवीण मौर्य, वैज्ञानिक; सुश्री सुनीता प्रसाद, स.मु.तक.अधि. (हिन्दी) तथा श्रीमती सुमेधा दास,

ओडिशा के कालाहांडी जिले के मछली किसानों के लिए "अन्तर्स्थलीय मत्स्य प्रबंधन" पर क्षमता निर्माण कार्यक्रम

आईसीएआर-केंद्रीय अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, बैरकपुर ने 26 से 29 जून 2024 के दौरान ओडिशा के कालाहांडी जिले के मछली किसानों के लिए "अन्तर्स्थलीय मत्स्य प्रबंधन" पर एक गैर सरकारी संगठन (विकास फाउंडेशन) प्रायोजित चार दिवसीय प्रदर्शन सह प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया। 2 अधिकारियों सहित 24 मछली किसानों ने प्रशिक्षण कार्यक्रम में भाग लिया। यह प्रशिक्षण वैज्ञानिक मछली पालन पर किसानों के ज्ञान को बढ़ाने के लिए आयोजित किया गया था। मछली पालन के विभिन्न पहलुओं जैसे तालाब निर्माण और प्रबंधन, नर्सरी तालाब प्रबंधन, मछली रोग प्रबंधन, प्रेरित मछली प्रजनन, फ़ीड सामग्री और उनकी तैयारी, सामाजिक-आर्थिक पहलू, सजावटी मछली पालन, अन्तर्स्थलीय खुले पानी में प्राकृतिक मछली खाद्य जीव, और खुले पानी में बुनियादी जल गुणवत्ता प्रबंधन आदि पर ज्ञान दिया गया। इसके अलावा, प्रशिक्षुओं को क्षेत्र में उनके प्रदर्शन दौरे के हिस्से के रूप में हलीशर, मछली फार्म ले जाया गया। बुनियादी जल गुणवत्ता मापदंडों, स्थानीय रूप से प्राप्त सामग्री का उपयोग करके मछली का चारा तैयार करना, मछली के रोगजनकों की पहचान करना और उचित उपचार आदि जैसे कई जरूरत -आधारित विषयों में व्यावहारिक प्रशिक्षण प्राप्त करने के साथ-साथ, उन्हें संस्थान की रीसर्क्युलेटरी एक्वाकल्चर सिस्टम (आरएएस), बायो-फ्लोक इकाइयों, सजावटी हैचरी इकाइयों और फीड मिल से भी अवगत कराया गया। आईसीएआर-सिफरी के प्रभारी निदेशक डॉ. श्रीकांत सामंत ने प्रशिक्षण कार्यक्रम का उद्घाटन किया। खेती और मत्स्य प्रबंधन में क्षमता निर्माण के महत्व पर जोर देते हुए, संस्थान के प्रभारी निदेशक ने भाग लेने वाले 24 मछली किसानों से स्थायी आजीविका, इष्टतम उत्पादन और बढ़े हुए मुनाफे के लिए प्राप्त ज्ञान को लागू करने का आग्रह किया। प्रशिक्षण कार्यक्रम में अन्तर्स्थलीय मत्स्य प्रबंधन में किसानों के बीच ज्ञान, कौशल और दृष्टिकोण के अंतर को कम करने पर ध्यान केंद्रित किया गया जो किसानों की आय को दोगुना करने के दृष्टिकोण के साथ संरेखित है। डॉ. सामंत ने प्रशिक्षुओं को अन्तर्स्थलीय मत्स्य क्षेत्र में नवीनतम आर्थिक अवसरों की रूपरेखा भी प्रदान की। फीडबैक सत्र में प्रशिक्षुओं ने अपनी समग्र संतुष्टि और अपने ज्ञान में उल्लेखनीय वृद्धि व्यक्त की। अपने समापन भाषण में, डॉ रंजन कुमार मन्ना, प्रमुख ने किसानों से अपने खेतों की उत्पादकता बढ़ाने के लिए अर्जित ज्ञान को लागू करने का आग्रह किया और उन्हें इस क्षेत्र के विकास को बढ़ावा देने के लिए अन्य मछुआरों और किसानों के साथ अपनी नई विशेषज्ञता साझा करने के लिए प्रोत्साहित किया। यह अनुमान लगाया गया है कि प्रशिक्षण कार्यक्रम का प्रशिक्षुओं पर आजीविका सुधार के लिए सकारात्मक प्रभाव पड़ेगा। प्रशिक्षण कार्यक्रम का समन्वय श्री गणेश चंद्रा और डॉ प्रीतिज्योति माझी ने किया, जिसमें डॉ अविषेक साहा ने सहायता की।

मुख्य शोध उपलब्धियां

- सर्वेक्षण के दौरान मई 2024 के दौरान उत्तराखंड, उत्तर प्रदेश, बिहार और पश्चिम बंगाल के चयनित स्थलों से गंगा नदी से पकड़ी गई मछलियों की अनुमानित कुल मात्रा 98.84 टन दर्ज की गई। कुल पकड़ी गई मछलियों में हिल्सा मछली का योगदान केवल 0.58% था। मई 2024 के दौरान गंगा नदी के प्रयागराज खंड से पकड़ी गई मछलियों की अनुमानित मात्रा 11.85 टन थी और मई 2023 की तुलना में इसमें 22% की गिरावट देखी गई।
- तमिलनाडु के सथानूर जलाशय के भौतिक-रासायनिक गुणों पर अध्ययन जलाशय की यूट्रोफिक प्रकृति का संकेत देता है।
- भारतीय नदी शाद (गुडूसिया चपरा) का आनुवंशिक स्टॉक गंगा नदी से लिया गया है।
- राष्ट्रीय नदी पशुपालन-मिशन-III के हिस्से के रूप में पश्चिम बंगाल में गंगा नदी में भारतीय मेजर कार्प के कुल 25.45 लाख फिंगरलिंग छोड़े गए हैं।

बैठक

- निदेशक, आईसीएआर-सीआईएफआरआई ने 21-22 मई, 2024 के दौरान पश्चिम बंगाल के दीघा में ग्लेकस एग्रो केम के तहत डीलर्स मीट के माध्यम से आईसीएआर-सीआईएफआरआई उत्पादों को बढ़ावा देने के लिए एक्वा-किसानों के लिए उत्पादों के उपयोग के बारे में डीलरों/हितधारकों के साथ बातचीत की।
- निदेशक, आईसीएआर-सीआईएफआरआई ने 4-5 जून, 2024 को एनएएससी, नई दिल्ली में एनएएएस की वार्षिक आम सभा की बैठक और स्थापना दिवस समारोह में भाग लिया।
- आईसीएआर-सीआईएफआरआई के निदेशक ने 6 जून, 2024 को एसएमडी, केएबी-II, पूसा, नई दिल्ली में आठ मत्स्य अनुसंधान संस्थानों के साथ विभिन्न तकनीकी और प्रशासनिक मामलों पर चर्चा करने के लिए बैठक में भाग लिया।
- आईसीएआर-सीआईएफआरआई के निदेशक ने 7 जून, 2024 को सुबह 10.30 बजे एनएमसीजी में डीजी, एनएमसीजी की अध्यक्षता में आयोजित बैठक में भाग लिया, जिसमें चरण I और II की पूर्ण हो चुकी परियोजनाओं सहित उपलब्धि, परिणाम और कार्रवाई योग्य बिंदुओं को दर्शाया गया।
- आईसीएआर-सीआईएफआरआई के निदेशक और वैज्ञानिकों ने विश्व बैंक के प्रतिनिधि के साथ बैठक में भाग लिया: आगामी परियोजना "उत्तर प्रदेश कृषि विकास और ग्रामीण उद्यम पारिस्थितिकी तंत्र सुदृढ़ीकरण परियोजना (यूपीएग्रीस)" के लिए 15 जून 2024 को यूपीडीएएसपी, लखनऊ में एक बैठक आयोजित की गई।
- आईसीएआर-सीआईएफआरआई के निदेशक और वैज्ञानिकों ने बाढ़कृत आर्द्रभूमि के सतत विकास और प्रबंधन पर अंतर्राष्ट्रीय कार्यशाला में भाग लिया असम में मछली उत्पादन बढ़ाने और नदी तटीय समुदाय की आजीविका में सुधार के लिए 19 जून 2024 को खानापारा, गुवाहाटी में मत्स्य विभाग असम द्वारा आयोजित एक कार्यक्रम में भाग लिया गया।
- निदेशक, आईसीएआर-सीआईएफआरआई ने 20 जून 2024 को आईसीएआर-नेपा परियोजना की समीक्षा बैठक में भाग लिया

अन्य कार्यक्रम

- श्री बिप्लब रॉय चौधरी, माननीय मत्स्य पालन मंत्री, पश्चिम बंगाल सरकार ने 17 जून 2024 को कोलाघाट में आईसीएआर-सीआईएफआरआई की हिलसा सुविधाओं का दौरा किया और आईसीएआर-सीआईएफआरआई द्वारा की गई हिलसा संस्कृति में प्रगति पर अपनी संतुष्टि व्यक्त की।
- आईसीएआर-सीआईएफआरआई ने 05 जून, 2024 को विश्व पर्यावरण दिवस मनाया जिसमें आईसीएआर-केंद्रीय मृदा लवणता अनुसंधान संस्थान, क्षेत्रीय अनुसंधान स्टेशन, कैनिंग टाउन के प्रधान वैज्ञानिक डॉ. उत्तम कुमार मंडल ने "आत्मनिर्भर तटीय कृषि की ओर: भारतीय सुंदरवन से साक्ष्य" विषय पर व्याख्यान दिया। इसके साथ ही सेराफुली घाट, बैरकपुर में मछली रैंचिंग कार्यक्रम का आयोजन किया गया जिसके बाद प्लास्टिक प्रदूषण पर जागरूकता शिविर का आयोजन किया गया।
- 21 जून 2024 को 10वां अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस मनाया गया जिसमें समाज के स्वास्थ्य के लिए योग का अभ्यास

करने और इसे लोकप्रिय बनाने में सभी कर्मचारियों की भागीदारी रही।

प्रशिक्षण

- आईसीएआर-सीआईएफआरआई ने 21-24 मई, 2024 के दौरान "ओपन सोर्स सॉफ्टवेयर पर जीआईएस मैपिंग की मूल बातें" पर प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया जिसमें वैज्ञानिकों, शोधार्थियों सहित 36 प्रतिभागियों ने सक्रिय रूप से भाग लिया।
- आईसीएआर-सीआईएफआरआई ने 27 मई से 01 जून, 2024 के दौरान "जलीय संसाधन प्रबंधन के लिए आणविक उपकरण" पर एक व्यावहारिक प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया जिसमें देश भर के विभिन्न विश्वविद्यालयों, कॉलेजों और शोध संस्थानों के सहायक प्रोफेसर, छात्रों (यूजी, पीजी और पीएचडी) और शोधकर्ताओं सहित 32 प्रशिक्षुओं ने भाग लिया।
- आईसीएआर-सीआईएफआरआई ने डेवलपमेंट फाउंडेशन (एनजीओ) के सहयोग से 28-31 मई, 2024 के दौरान "अन्तर्स्थलीय मत्स्य प्रबंधन" पर एक प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया जिसमें ओडिशा के गजपति जिले के 2 सहायक मत्स्य अधिकारियों (एएफओ) सहित 23 किसानों ने सक्रिय रूप से भाग लिया।
- आईसीएआर-सीआईएफआरआई ने 06 जून, 2024 को एलन करियर इंस्टीट्यूट, बैरकपुर, पश्चिम बंगाल के 21 छात्रों के लिए एक एक्सपोजर विजिट का आयोजन किया जिसमें छात्रों ने विभिन्न प्रयोगशालाओं और सुविधाओं के साथ-साथ सीआईएफआरआई की सजावटी मछली पालन इकाई का दौरा किया।
- आईसीएआर-सीआईएफआरआई ने 07-13 मई, 2024 के दौरान रोहतास, बिहार के किसानों के लिए "अन्तर्स्थलीय मत्स्य प्रबंधन" पर डीओएफ, बिहार प्रायोजित प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया जिसमें रोहतास जिले, बिहार के 30 मछली किसानों ने भाग लिया।
- डॉल्फिन और मछली जैव विविधता संरक्षण पर 14 जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किए गए जिसमें पश्चिम बंगाल की विभिन्न नदियों के 766 मछुआरों और स्थानीय समुदायों को जागरूक किया गया।
- आईसीएआर-सीआईएफआरआई ने 9 जून, 2024 को सिटॉन्ग, दार्जिलिंग, पश्चिम बंगाल के 50 मछुआरों के लिए एससीएसपी के तहत मछली बीज वितरित करके मछुआरों की आय सृजन और आजीविका विकास की पहल की।

अन्य

- पश्चिम बंगाल में फरक्का बैराज के अपस्ट्रीम में कुल 176 हिल्सा मछलियों का पालन किया गया। पालन के दौरान हिल्सा का रिकॉर्ड किया गया वजन 22.8 ग्राम (न्यूनतम) से 111 ग्राम (अधिकतम) देखा गया।
- डॉ. आर. के. मन्ना, विभागाध्यक्ष, आरडब्ल्यूएफ प्रभाग ने 03-14 जून 2024 के दौरान आईसीएआर-एनएएआरएम, हैदराबाद द्वारा आयोजित 'नेतृत्व विकास (एक प्री-आरएमपी कार्यक्रम)' पर प्रबंधन विकास कार्यक्रम में भाग लिया।
- डॉ. अर्चना सिन्हा ने भर्ती गतिविधियों में विशेषज्ञ के रूप में राष्ट्रीय परीक्षण एजेंसी (एनटीए), नई दिल्ली को अपनी सेवाएं दीं।
- कॉपीराइट रजिस्ट्री, भारत सरकार के साथ 6-7 जून 2024 को दो कॉपीराइट आवेदन दायर किए गए।

प्रकाशन मंडल

प्रकाशक: बसन्त कुमार दास, निदेशक,

संकलन एवं सम्पादन: संजीव कुमार साहू, प्रवीण मौर्य, सुनीता प्रसाद एवं सुमेधा दास

फोटोग्राफी: सुजीत चौधरी एवं सम्बंधित वैज्ञानिक।

भा.कृ.अनु.प.-केंद्रीय अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान,(आईएसओ 9001: 2015 प्रमाणित संगठन), बैरकपुर, कोलकाता, पश्चिम बंगाल 700120, भारत

दूरभाष: +91-33-25921190/91; फैक्स: +91-33-25920388; ई- मेल : director.cifri@icar.gov.in; वेबसाइट : www.cifri.res.in

ISSN 0970-616X

सिफरी मसिक समाचार में निहित सामग्री प्रकाशक की अनुमति के बिना किसी भी रूप में पुन: उत्पन्न नहीं की जा सकती है